

दिनांक 06 मार्च, 2020

जैसा कि आप जानते हैं , विश्वभर में कोरोना वायरस (कोविड-19) की घटनाएं सामने आई हैं। भारत में भी अभी तक कोरोना वायरस के 30 पॉजिटिव मामले सामने आए हैं। हालांकि इससे घबराने की कोई जरूरत नहीं है क्योंकि आयुष एक महत्वपूर्ण मंत्रालय होने के नाते जन-स्वास्थ्य से जुड़ी इस चुनौती के कारण उत्पन्न हुई परिस्थितियों से समुचित रूप से लड़ने के लिए पूरी तरह से तैयार है, फिर भी यह उचित होगा कि आयुष की इन पद्धतियों की क्षमता और प्रमाणों पर विचार करते हुए आयुष आधारित जन-स्वास्थ्य प्रतिक्रिया को प्रकाश में लाने में अन्य हितधारकों का सहयोग लिया जाए। विगत में भी कई राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों ने इस तरह की परिस्थितियों से लड़ने में आयुष पद्धतियों के उपचारों का एक प्रभावी जन-स्वास्थ्य प्रतिक्रिया के रूप में इस्तेमाल किया है।

इसे ध्यान में रखते हुए आयुष मंत्रालय अपने प्रशासनिक नियंत्रणाधीन अनुसंधान परिषदों की सिफारिशों के साथ एक एडवाइजरी (**प्रति संलग्नक-1 के रूप में**) लेकर आया है जिसे संबंधित राज्य/संघ राज्य क्षेत्र में प्रचलित चिकित्सा पद्धति के अनुसार आयुष कार्मिकों और सुविधाओं के माध्यम से संसूचित/कार्यान्वित किया जा सकता है।

विभिन्न आयुष चिकित्सा पद्धतियों के इन उपचारों में रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के प्रमाण हैं और इसी प्रकार की बीमारियों में श्वसन-लक्षणों को सुधारने में सहायक हैं। इस संबंध में एक पृथक विषय-सूची भी आपके सुलभ संदर्भ हेतु **संलग्नक-11** में दी गई है।

इसलिए आपसे अनुरोध है कि आप अपने राज्य/संघ राज्य क्षेत्र में जन-स्वास्थ्य के लिए जवाबदेह अन्य हितधारक विभागों के साथ परामर्श करके इस कार्यनीति को लागू करने के लिए आवश्यक कार्रवाई करें।

आपका,
संलग्नक: यथोपरि।

हस्ता/-
(राजेश कोटेचा)

सेवा में,

सभी राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों के मुख्य सचिव

प्रतिलिपि:

- 1) सभी राज्य/संघ राज्य क्षेत्रों के प्रधान सचिव।
- 2) सभी राज्य/संघ राज्य क्षेत्रों के निदेशक/आयुक्त/मिशन निदेशक (आयुष)

भारत में कोरोना वायरस (कोविड-19) के फैलाव से उत्पन्न होने वाली चुनौती से निपटने के लिए आयुष मंत्रालय की एडवाइजरी

कोरोना वायरस (सीओवी) का एक बड़ा वायरस परिवार है जो सामान्य सर्दी से लेकर गंभीर रोगों तक अर्थात् मध्य पूर्व श्वसन तंत्र सिंड्रोम (एमईआरएस-सीओवी) और गंभीर एक्यूट रेस्पिरेटरी सिंड्रोम (एसएआरएस-सीओवी) का कारण बनता है। नए कोरोना वायरस रोग (सीओवीआईडी-19) की वृहान, चीन से पहली बार 31 दिसंबर, 2019 में रिपोर्ट की गई थी। विश्व स्वास्थ्य संगठन के तथ्यों के अनुसार दिनांक 03.03.2020 तक 72 देशों ने सीओवीआईडी-19 के 90,870 पुष्ट मामलों और 3112 मौतों की रिपोर्ट की है। दिनांक 03.03.2020 तक भारत के विभिन्न हिस्सों से 05 पुष्ट मामले दर्ज किए गए हैं।

संक्रमण के सामान्य संकेतों में बुखार, खांसी, मायलाजिया, थकान और सांस लेने में कठिनाई शामिल हैं। अधिक गंभीर मामलों में, संक्रमण से निमोनिया, एक्यूट रेस्पिरेटरी सिंड्रोम, किडनी फेल होने के साथ मृत्यु भी हो सकती है।

संक्रामक रोग में मानव प्रतिक्रिया में प्रतिरक्षा प्रणाली की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। वायरल संक्रमण ऑक्सीडेटिव तनाव को प्रेरित करते हैं और वायुमार्ग एपेथीलियल कोशिकाओं को क्षति पहुंचाते हैं। परिणामस्वरूप, बढ़ते हुए तनाव के कारण शरीर में अतिसंवेदनशील संक्रामक रोग होने के कारण तनाव, पोषण और प्रतिरक्षा की पहचान होती है। कोरोना वायरल संक्रमण के प्रबंधन के मुख्य आधार में सहायक परिचर्या, पोषण और किसी वायरलरोधी कारक अथवा वैक्सीन की अनुपस्थिति में रोग को फैलने से रोकना शामिल हैं।

विश्व स्वास्थ्य संगठन के विशेषज्ञ समूहों ने 2014 में इबोला के प्रकोप के दौरान सिफारिश की थी कि कोई वैक्सीन अथवा वायरलरोधी उपचार उपलब्ध नहीं होने की बात को ध्यान में रखते हुए “संभावित उपचार या रोकथाम के रूप में अभी तक अज्ञात प्रभाविकता और प्रतिकूल प्रभावों के रूप में अप्रमाणित हस्तक्षेपों की पेशकश करना नैतिक है।”

आयुष पद्धतियों का दृष्टिकोण:

आयुष चिकित्सा पद्धतियों का समग्र दृष्टिकोण जीवनशैली संशोधन के माध्यम से रोग की रोकथाम, आहार प्रबंधन, रोगनिरोधी हस्तक्षेप और सरल उपचारों के माध्यम से रोगनिरोधक क्षमता में सुधार पर ध्यान केंद्रित करना है।

उदाहरण के लिए, आयुर्वेद प्रबंधन की विशेषताओं में रोग पैदा करने वाले कारकों से बचने और संक्रमण वाहकों के विरुद्ध प्रतिरक्षा में वृद्धि करने पर जोर देना शामिल है। होम्योपैथी का निवारक पहलू सर्वविदित है और ऐतिहासिक रूप में होम्योपैथी का कथित तौर पर हैजा, स्पैनिश इन्फ्लुएंजा, येलो फीवर, स्कार्लेट फीवर, डिप्थीरिया, टाइफायड आदि महामारियों की रोकथाम के लिए इस्तेमाल किया जाता है। कई मामलों में एकत्र किए गए आंकड़ों के

अनुसार जीनस एपिडेमिक्स इस विशेष महामारी में अधिक प्रभावी हो सकता है। यह बताया गया है कि हाल के दिनों में चिकनगुनिया, डेंगू बुखार, जापानी एन्सेफलाइटिस और हैजा जैसी विभिन्न प्रकार की बीमारियों के दौरान उनको फैलने से रोकने और अच्छे परिणाम प्राप्त करने के लिए जीई का उपयोग किया गया था। महामारियों को नियंत्रित करने में होम्योपैथी के उपयोग के ब्यौरे हाल के प्रकाशनों में दिए गए हैं।

व्यापक रूप से शामिल प्रकोप का प्रबंधन करने के लिए आयुष दृष्टिकोण:

- i. निवारक और रोगनिरोधी
- ii. बीमारियों की तरह सीओवीआईडी-19 जैसी बीमारियों के लक्षणों का प्रबंधन
- iii. पारंपरिक परिचर्या में हस्तक्षेपों को जोड़ना

साक्ष्यों के आधार पर समर्थित आयुष चिकित्सा पद्धतियों की क्षमता और शक्ति पर आधारित तथा आयुष मंत्रालय के अंतर्गत अनुसंधान परिषदों की सिफारिशों के अनुसार निम्नलिखित पद्धतिवार दृष्टिकोणों की सिफारिश की गई है:

i. निवारक और रोगनिरोधक:

आयुर्वेद:

शमशमनी वटी 500 मिलीग्राम दिन में दो बार गर्म पानी के साथ 15 दिनों तक। इस औषधि में टिनोस्पारा कॉर्डिफोलिया 7,8,9 का जलीय अर्क होता है।

सिद्ध:

नीलवेम्बु कुडीनीर काढ़ा 60 मिली दिन में दो बार 07 दिनों तक। इस औषधि में एन्ड्रोग्रेहिंस पनिकुलेटा और अन्य 10,11,12, का जलीय अर्क है।

यूनानी:

3 ग्राम बहिदाना (*सिडोनिया ओबलॉगा*), 5 अदद उन्नाब (*ज़िज़िफस जुज्यूब*) को उबालकर काढ़ा तैयार करना। 9 अदद सपिस्तान (कॉर्डिया मायक्सा) जल के साथ। (इन्हें 250 मिली पानी में उबालें- इसे तब तक उबालें जब तक कि यह आधा न रह जाए - इसे छान लें - कांच की बोतल में रखें और इसे गुनगुना इस्तेमाल करें)। इस काढ़े को तैयार करने में प्रयोग में लाई जाने वाली औषधियों में एंटीऑक्सिडेंट एक्टिविटी, इम्यूनो-मोडुलेटरी, एंटीलार्जिक, मांसपेशियों को आराम देने वाले क्रियाकलाप और इन्फ्लूएंजारोधी क्रियाकलाप शामिल है। इस काढ़े को दिन में दो बार 14 दिनों तक लिया जा सकता है।

होम्योपैथी:

आर्सेनिकम एल्बम 30, रोजाना खाली पेट एक बार तीन दिन तक। खुराक को एक महीने के बाद दोहराया जाना चाहिए जब तक कि कोरोना वायरस संक्रमण समाप्त न हो जाए।

एक अध्ययन में आर्सेनिक एल्बम एक सूत्रीकरण एचटी29 कोशिकाओं और मानव मैक्रोफेज प्रभावित घटकों में से एक के रूप में। इसके अलावा, इसमें ↓एनएफ-केबी अति सक्रियता (ट्रांसफेक्टेड एचटी29 कोशिकाओं में रिपोर्टर जीन जीएफपी की अभिव्यक्ति में कमी)

↓टीएनएफ- α मैक्रोफेज में रिलीज़। इसके अतिरिक्त आर्सेनिक एल्बम दैनिक रूप में श्वसन संक्रमण के मामलों में एक आम नुस्खा है।

ii. कोविड-19 की तरह की बीमारियों के लक्षण प्रबंधन

आयुर्वेद

1. आयुष-64: दिन में दो बार 02 गोलियां
2. अगस्त्य हरीतकी: 05 ग्राम। गर्म पानी के साथ दिन में दो बार
3. नथुना: नाक के छिद्र के लिए: दोनों नथुनों में दो बूंद

सिद्ध

1. नीलेवम्बु कुडीनीर/काबा सुरा कुडीनीर - काढ़ा 60 मि.ली. दिन में दो बार
2. अडातोदाई मनपगु - सिरप 10 मिली दिन में दो बार

होम्योपैथी

विभिन्न दवाएँ जो फ्लू जैसे बीमारी के इलाज में कारगर पाई जाती हैं, वे हैं आर्सेनिकम एल्बम, ब्रायोनिआ अल्बा, रियुस टोक्सिको डेंड्रोन, बेलाडोना जेल्सेमियम यूपोरियम परफोलिएटम।

इन सभी दवाओं को संबंधित आयुष प्रणालियों के योग्य चिकित्सकों के परामर्श से लिया जाना चाहिए।

iii. पारंपरिक देखभाल के लिए उपचार हेतु जोड़ें

आयुर्वेद

1. आयुष-64: 02 गोलियाँ दिन में दो बार
2. अगस्त्य हरीतकी: 05 ग्राम गर्म पानी के साथ दिन में दो बार

सिद्ध

1. विशुरा कुडीनीर: काढ़ा 60 मि.ली. एक दिन में दो बार
2. काबा सुरा कुडीनीर - काढ़ा 60 मि.ली. दिन में दो बार

होम्योपैथी

उपशीर्ष-होम्योपैथी के तहत कोविड-19 जैसी बीमारियों के लक्षण में उल्लिखित प्रबंधन को भी पारंपरिक देखभाल में जोड़ा जा सकता है।

इन सभी औषधियों को संबंधित आयुष पद्धतियों के योग्य चिकित्सकों के परामर्श से लिया जाना चाहिए।

सामान्य निवारक उपाय (पहले से अधिसूचित):

- i. व्यक्तिगत स्वच्छता का भलि-भांति ध्यान रखें।
- ii. साबुन से लगातार हाथ धोने का अभ्यास करें।
- iii. श्वसन शिष्टाचार का पालन करें - खांसने या छींकने पर अपना मुंह ढक लें।
- iv. ऐसे लोगों के साथ निकट संपर्क से बचें जो अस्वस्थ हैं या जिनमें बीमारी के लक्षण दिख रहे हैं- जैसे कि खांसी, बहती नाक आदि।
- v. जीवित पशुओं के संपर्क में आने से बचें और कच्चे/अधपके मांस का सेवन न करें।

- vi. फार्मों, जीवित पशु बाजारों में या पशु बधघरों में जाने से बचें।
vii. अगर आपको श्वसन संबंधी लक्षण जैसे खांसी या बहती नाक है तो मास्क पहनें।

इसके अतिरिक्त, निम्नलिखित आयुष विशिष्ट उपायों को अपनाया जा सकता है:

आहार ताजा, गर्म, पचने में आसान, साबुत अनाज, मौसमी सब्जियों आदि से युक्त होना चाहिए। तुलसी के पत्तों, उबले हुए अदरक और हल्दी के साथ उबला हुआ पानी लगातार पीना फायदेमंद होगा। चुटकी भर काली मिर्च के साथ शहद भी खांसी के मामले में फायदेमंद है। ठंडे, जमे हुए और भारी खाद्य पदार्थों से बचा जा सकता है। ठंडी हवा के सीधे संपर्क में आने से बचना हमेशा फायदेमंद होता है। उचित आराम और समय पर नींद की सलाह दी जाती है। योगासन और प्राणायाम का अभ्यास योग्य योग प्रशिक्षक के मार्गदर्शन में किया जा सकता है।

इसी तरह के लक्षणों में उपयोगी आम औषधीय पादप हैं तुलसी (ऑसीमम सेंट्रम), गुडुची (टीनोस्पोरा कॉर्डिफोलिया), अदरक (ज़िंगिबर ऑफिसिनेल) और हल्दी (करकुमालोंग)।

रोग प्रतिरक्षा को बढ़ावा देने और स्वशन संबंधी लक्षणों में सुधार लाने में सहायता
हेतु विभिन्न आयुष पद्धतियों के उपचार के संदर्भ/उद्धरण

1. पेडर्सन ए. जैचरी आर, बोब्जेर्ग डीएच, उपरी श्वसन संक्रमण पर मनोवैज्ञानिक तनाव के प्रभावी अध्ययनों पर एक मेटा-विश्लेषण। साइकोसोम चिकित्सा (इंटरनेट) अक्टूबर 2010 (4 मार्च 2020 को उद्धृत): 72(8):823-32. <http://journals.lww.com/00006842-201010000-00014> से उपलब्ध।
2. जेनसन एमएम रासमुसेन एएफ, वायरल संक्रमण के कारण तनाव और संवेदनशीलता II. वेसिक्यूलर स्टोमेटिटिस के लिए ध्वनि तनाव और संवेदशीलता। जे इम्यूनोल (इंटरनेट), 1 जनवरी 1963 (4 मार्च 2020 को उद्धृत); 90(1):21-3. <http://www.ncbi.nlm.nih.gov/pubmed/13957641> से उपलब्ध।
3. विश्व स्वास्थ्य संगठन इबोला वायरस रोग हेतु गैर पंजीकृत उपचारों के उपयोग के लिए नैतिक विचार (ईवीडी) <https://www.who.int/media> केंद्र/समाचार/विवरणियां/2014/इबोला-नैतिक-समीक्षा-सार/ईएन.
4. दिनेश कुमार आदि भारतीय पारंपरिक स्वास्थ्य परिचर्या पद्धति में इम्यूनोमोड्यूलेटर्स की समीक्षा खंड 45, अंक 3, जून 2012 पृष्ठ 165-184.
5. विंस्टन जे. होम्योपैथी के प्रकार वेलिंगटन, न्यूजीलैण्ड: ग्रेट ऑक प्रकाशन: 1999.
6. डेवे डब्ल्यू.ए.. इंप्ल्यूऐंजा में होम्योपैथी-ए कॉरस ऑफ फिफ्टी इन हार्मोनी-अमेरिकी होम्योपैथी संस्थान की पत्रिका 1920-21; 13: 1038-1043.
7. शर्मा ए.; चड्ढा, एन.के.; दास, एस.के.; सेन ए.; राँय एस.डी.; चानू, टी.आई., सावंत पी.बी.; प्रकाश, सी. एरोनोमस हाइड्रोफिला के विरुद्ध लेविमोराहिता (हैमिल्टन) के सेल्यूलर प्रतिरक्षा प्रतिक्रियाओं पर प्रयोग पर सी. टिनोसपोरा कॉर्डिफोलिया अर्क का प्रभाव। इंट.जे. पीयूआरई, एपीपीएल, बायोसाइ. 2017;5765-775 (क्रासरिफ्रे.)
8. कालिकर एमबी, भवानी वीआर, वरदपांडे यूके, सोनटके एसडी, सिंह आरपी, खियानी आरके। मानव रोगक्षम अपर्याप्तता वाले वायरस पॉजिटिव रोगियों में तिनोसपोरा कॉर्डिफोलिया अर्क का इम्यूनोमॉड्यूलेटरी प्रभाव। इण्डियन जे. फार्माकोल 2008; 40; 40(3): 107-10.
9. मोरे, पी. पाई, मेक्रोफेज सक्रियता पर तिनोसपोरा कॉर्डिफोलिया (गुडुची) के इम्यूनोमॉड्यूलेटरी प्रभाव। बायो. चिकित्सा 2011;3,134-140.
10. जीएस लेखा आदि - नीलावेम्बू कुडीनीर का प्रयोग करते हुए डेंगू प्रभावित क्षेत्र में एक इंटरनेशनल कोहार्ट अध्ययन "आईओएसआर जर्नल ऑफ डेंटल एंड मेडि. साइ. (आईओएसआर - जेडीएमएस) खंड 17, अंक 2 (2018), पीपी 1923"
11. क्रिस्टियन जी.जे आदि सूक्ष्म जड़ी-बूटी सिद्ध औषधयोग के रक्षात्मक प्रभाव-डेंगू सहित सामान्य वायरल बुखार के उपचार में नीलावेम्बू कुडीनीर एक नियंत्रण दृष्टिकोण का मामला। इंट जे फार्म साइ रेस 2015; 6(4): 1956-60.

12. कलाइरासि आदि डेंगू बुखार के उपचार हेतु नीलवेम्बू कुडीनीर और अदाथोडाई मनापागु का मिश्रण. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ करंट रिसर्च, अंक 4, पीपी 978-981 2013.
13. साइडोनिया ओबलॉग का चिकित्सकीय महत्व- प्रो. डॉ. अली इस्माइल, अल्सनाफी, भेषज संहिता विभाग, चिकित्सा कॉलेज थी कार विश्वविद्यालय, नासिरियाह पो.ऑ. बाक्स 42 की समीक्षा। आईओएसआर जर्नल ऑफ फार्मसी www.iosrphr.org (ई)-ISSN: 2250-3013, (पी)- ISSN: 2319-4219 खंड 6, अंक 6 2 (जून 2016), पीपी. 87-99.
14. हमाजू वाई. यासुईएच, इन्नो टी, कुमे सी, ओमनयूडा एम फिनोलिक प्रोफाइल, एंटी ऑक्सीडेंट प्रोपर्टी एंड एंटी-इंफ्ल्यूएंजा वायरस एक्टिविटी ऑफ चाइनीज क्वीन्स (स्यूडोसाइनोडिया साइनेसिस स्नाइड), क्वींस (साइनोडिया ओवलॉग मिल) और एप्पल (मालुस डोमेस्टिका मिल) फुटल, जे एग्रिक फूड केम, 2005 फरवरी 23; 53 (4): 928-34.
15. होंग ई एच, सोंग जेएच, कॉंग केबी आदि-अंफ्ल्यूएंजा ए/पीआर 8 वायरस से विटुलिनिक एसिड की एंटीइंफ्ल्यूएंजा गतिविधि बायोमोल थेर. 2015; 23 (4): 345-349. डीओआई: 10.4062/बायोमोलटर. 2015.019.
16. चाई ए, कॉंग सी, झांग वाई, टांग एल, गुवो एच, ली एच, झांग के- क्रोनिक फटीग सिंड्रोम चूहों पर जिजफस जुजुबे के फलों से पॉलिसचेराइड कंज्युगेट्स के इम्यूनोमॉड्यूलेटिंग और एंटीऑक्सीडेंट प्रभाव. कार्बोहाइ. पोलिम. 2105 मई 20; 122:189-96. डीओआई: 10.1016/जे. कार्बपोल. 2014.12.082 ईपीयूबी 2015 जनवरी 14.
17. अली डब्ल्यू आर, अल-ऊसादी जेइटी और इब्राहिम ए.ए. हाईड्रेटिड सिस्ट तरल पदार्थ के साथ प्रतिरक्षित चूहों में कोर्डिया मायक्सा (एल) जलीय फल के अर्क का इम्यूनोमॉड्यूलेटरी. जर्नल ऑफ साइं. रिसर्च 2015; 5(10); 75-83.
18. एड-दाहन एचएए. कोर्डिया मापक्सा (एल) फल के एल्कोहालिक अर्क की इम्यूनोमॉड्यूलेटरी गतिविधि का पता लगाना। अल-कादिसिया जर्नल ऑफ एप्लाइड साइं. 2010; 15(4): 1-8
19. अल-बेयाटी एमएए और अल-तेहन एफजे-भेइ में कॉर्डिया मेक्सा पौध अर्क का श्वास नली संबंधी हल्की मांसपेशियों को आराम देने वाली गतिविधि का तंत्र। ईराकी जर्नल ऑफ वेटरनरी औषधि 2008; 32(2): 214-226.
20. अफजल एम, आब्यूकवे सी, खान एआर और बरकत एच. कोर्डिया माइक्सा एल की एंटीऑक्सीडेंट गतिविधि और इसकी लिवर संबंधी सुरक्षात्मक क्षमता. ईजेईएफ चे 2007; 8(6): 2236-2242
21. बेलावाइट पी, सिंगनोरिनी ए, मरजोटो एम, मोराट्टी ई, बोनाफिनी सी, ओलिओसिओडी. कोशिका संवेदनशीलता, गैर-रेखिकता और व्युत्क्रम प्रभाव. होम्योपैथी. 2015 अप्रैल: 104(2):139-60
22. श्रीकांत नारायण एवं के. डी. शर्मा एवं आर के सिंघल तथा जी, वेलुचामी. मलेरिया के उपचार में आयुष-64 का प्रभाव. 2001.

23. दिव्या काजरिया, नसरीन अहमद और दीपक भाटी. सीओपीडी के उपचार में आयुर्वेदीय चिकित्सा की नैदानिक प्रभावकारिता का मूल्यांकन-अंतः श्वसन (सांस लेना) चिकित्सा और रसायन एक यादृच्छिक कोहार्ट नियंत्रण नैदानिक अध्ययन। नशतर श्वसन चिकित्सा। दि लैसेटरम-डी-19-00759.
24. दल्वी आदि एएनयू तेल नास्य उद्गम 2015, 03(02): पृष्ठ 42-45.
25. सर्वणम जे आदि. सूजनरोधी, ज्वरनिवारक और जीवाणुरोधी कबासुर कुडीनीर चूर्णम का अध्ययन। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ करंट एंडवांसड रिसर्च , खंड 17; अंक 2, 2018.
26. शिलाजीत आदि, सूक्ष्म जड़ी-बूटीय औषधयोग पर समीक्षा विशा सूरा कुडीनीर चूर्णम-सिद्ध पद्धति में प्रयुक्त होने वाला एक शास्त्रीय ज्वररोधी। यूरोपियन जर्नल ऑफ फार्मास्यूटिकल एंड मेडिकल रिसर्च, 2017 4(9), 184-192.
27. चक्रवर्ती पी.एस, लांबा सीडी, नायक डी, जॉन एमडी, सरकार डीबी, पोद्दार ए, आर्या जे.एस, राजू के, विवेकानंद के, सिंह एचबी, बेग एच, पुस्ती ए.के., सिंह वी, नायक सी-। बीमारी जैसे इन्फ्ल्यूएंजा में व्यक्तिगत होम्योपैथिक उपचार का प्रभाव। एक बहुकेंद्रीय, सिंगल ब्लाइंड, यादृच्छिक, कूट-भेषज अध्ययन। इंडियन जे रेस. होम्योपैथी 2013; 7: 22-30.
28. शिलाजीत आदि सूक्ष्म जड़ी-बूटीय औषधयोग पर समीक्षा विशा सूरा कुडीनीर चूर्ण- एक शास्त्रीय ज्वररोधी औषधि जो सिद्ध पद्धति में प्रयुक्त होती है। यूरोपियन जर्नल ऑफ फार्मास्यूटिकल एंड मेडिकल रिसर्च, 2017 4(9), 184-192.
29. मार्क मौरिस कोहेन- तुलसी-ओसीमम सेंक्टमः सभी कारणों के लिए एक जड़ी-बूटी. जे आयुर्वेद इंटेग चि. 2014 अक्टूबर- दिसम्बर; 5(4): 251-259.
30. शर्मा आदि. गुडुची (तिनोस्पोरा कॉर्डिफोलिया) के चिकित्सीय गुणः एक औषधीय ऐतिहासिक संस्मरण। भारतीय चिकित्सा में अनुसंधान और शिक्षा की पत्रिका XX(2):113-28 अप्रैल 2014.
31. डॉ. अनन्त सजनाम, डॉ. सत्येंद्र कुमार सिंह. एक आयुर्वेदिक साहित्य में सुंठी (सोंठ) की समीक्षा। चिकित्सा विज्ञान और नैदानिक अनुसंधान पत्रिका खंड 05 अंक 09 सितम्बर 2017.
32. कुरूप वी, प्रकाश एलएच, हारिनी ए (2013)-हल्दी (कर्कुमा लॉंग) की भेषजसंहिता गतिविधियां; जे. होम्योपैथी आयुर्वेद चिकित्सा 2:133. डीओआई: 10. 4172/2167-1206.1000133.
33. चन्द्रशेखरन सी.वी., सुदरराजन के. इडविन जे आर, गुरुराजा जीएम, मुंडकी नाजेडू डी, एवं अग्रवाल ए (2013)- हल्दी अर्क की उत्तेजक प्रतिरक्षा और सूजन रोधी गतिविधियां और इसका बहुशर्करा-अंश, फार्माकोग्नोसी अनुसंधान, 5(2), 71-9.